क्रिया और क्रिया के भेद:-

क्रिया- जिस शब्द अथवा शब्द-समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे-

(1) गीता नाच रही है।

(2) बच्चा दूध पी रहा है।

क्रिया के दो भेद हैं-

(1) अकर्मक क्रिया।

(2) सकर्मक क्रिया।

1. अकर्मक क्रिया:-

जिन क्रियाओं का फल सीधा कर्ता पर ही पड़े वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।ऐसी अकर्मक क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती।अकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण हैं-

(1) गौरव रोता है।

(2) साँप रेंगता है।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ- लजाना, होना, बढ़ना, सोना, खेलना, अकड़ना, डरना, बैठना, हँसना, उगना, जीना, दौड़ना, रोना, ठहरना, चमकना, डोलना, मरना, घटना, फाँदना, जागना, बरसना, उछलना, कूदना आदि।

2. सकर्मक क्रिया:-

जिन क्रियाओं का फल (कर्ता को छोड़कर) कर्म पर पड़ता है वे सकर्मक क्रिया कहलाती हैं।इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक हैं, सकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण हैं-

(1) मैं लेख लिखता हूँ।

(2) रमेश मिठाई खाता है।

3.द्विकर्मक क्रिया:-

जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।द्विकर्मक क्रियाओं के उदाहरण हैं-

(1) मैंने श्याम को पुस्तक दी।

(2) सीता ने राधा को रुपये दिए।

ऊपर के वाक्यों में 'देना' क्रिया के दो कर्म हैं।अतः देना द्विकर्मक क्रिया हैं।

धातु:- जिस मूल रूप से क्रिया को बनाया जाता है उसे धातु कहते है। यह क्रिया का ही एक रूप होता है। धातु को क्रिया का मूल रूप कहते हैं।

जैसे:- बोल, पढ़, घूम, लिख, गा, हँस, देख, जा, खा, बोल, रो आदि।

धातु के भेद:-

1. मूल धातू
2. सामान्य धातु
3. व्युत्पन्न धातु
4. यौगिक धातु

1. मूल धातु:- मूल धातु किसी पर आश्रित न होकर स्वतंत्र होती हैं उसे मूल धातु कहते हैं।
जैसे:- खा, पढ़, लिख, गा, जा, रो आदि।

2. समान्य धातु:- धातु में जो ना प्रत्यय जोडकर उसका सरल रूप बनाया जाता है उसे सामान्य धातु कहते हैं।
जैसे:- सोना, रोना, पढना, बैठना, लिखना, बोलना, घूमना, गाना, हँसना, देखना, जाना, खाना, बोलना, रोना आदि।

3. व्युत्पन्न धातु:- सामान्य धातु में प्रत्यय लगाकर या और किसी कारण से जो परिवर्तन किये जाते हैं उसे व्युत्पन्न धातु कहते हैं।
जैसे:- पढवाना, कटवाना, दिलवाना, करवाना, सुलवाना, लिखवाना, बुलवाना, खिलवाना, धुलवाना आदि।

4. यौगिक धातु:- यौगिक धातु को प्रत्यय जोडकर बनाया जाता है।
जैसे:- पढना से पढ़ा, लिखना से लिखा, खाना से खिलाई जाती आदि।

रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद है:-
1- सामान्य क्रिया:- जब वाक्य में केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है !
जैसे:- तुम चलो, मोहन पढ़ा आदि !

2- संयुक्त क्रिया:- दो या दो से अधिक क्रियाओं के मेल से बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ होती है !
जैसे:- मैंने खाना खा लिया।
तुम घर चले जाओ।

3- नामधातु क्रियाएँ:- क्रिया को छोड़कर दुसरे शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, एवं विशेषण) से जो धातु बनते है, उन्हें नामधातु क्रिया कहते है।
जैसे:- अपना - अपनाना, गरम - गरमाना आदि

4- प्रेरणार्थक क्रिया:- जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य से करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।
जैसे:- मैंने पत्र लिखवाया ।
उसने खाना खिलवाया ।
सफने उसे हंसाया ।

5- पूर्वकालिक क्रिया:- जब कोई कर्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरी क्रिया करता है
तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
जैसे:- वे पढ़कर चले गये ।
मैं दौड़कर जाउँगा ।